



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2320-6710

# IJRSET

International Journal of Innovative Research in  
**SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY**

# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 10, Issue 1, January 2021

**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

9940 572 462

6381 907 438

[ijirset@gmail.com](mailto:ijirset@gmail.com)

[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

# भारत-पाक युद्धों का मूल्यांकन (1948, 1965, 1971 और कारगिल)

Dr. Kanchan Mishra

Associate Professor, Department of Defence and Strategic Studies, V.S.S.D. College, Kanpur, Uttar Pradesh, India

## सार

1947 में ब्रिटिश भारत के विभाजन और बाद में भारत और पाकिस्तान के प्रभुत्व के निर्माण के बाद से, दोनों देश कई युद्धों, संघर्षों और सैन्य गतिरोधों में शामिल रहे हैं। कश्मीर और सीमा पार आतंकवाद पर लंबे समय से चल रहा विवाद दोनों राज्यों के बीच संघर्ष का प्रमुख कारण रहा है, भारत और पाकिस्तान एक दूसरे के आमने-सामने नहीं हैं जिसके कारण दोनों देशों के बीच कई युद्ध हो चुके हैं। एक बार भारत का हिस्सा बनने के बाद पाकिस्तान बार-बार घुसपैठ करने की कोशिश करता है जो युद्ध का कारण बनता है। अब तक लड़े गए युद्धों की सूची पर एक नजर।

## परिचय

1947 का भारत-पाक युद्ध, जिसे प्रथम कश्मीर युद्ध भी कहा जाता है, अक्टूबर 1947 में शुरू हुआ। पाकिस्तान की सेना के समर्थन के साथ हज़ारों की संख्या में जनजातीय लड़ाकुओं ने कश्मीर में प्रवेश कर राज्य के कुछ हिस्सों पर हमला कर उन पर कब्जा कर लिया, जिसके फलस्वरूप भारत से सैन्य सहायता प्राप्त करने के लिए कश्मीर के महाराजा को इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ अक्सेशन पर हस्ताक्षर करने पड़े। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने 22 अप्रैल 1948 को रेसोल्यूशन 47 पारित किया। इसके बाद तत्कालीन मोर्चों को ही धीरे धीरे ठोस बना दिया गया, जिसे अब नियंत्रण रेखा कहा जाता है। 1 जनवरी 1949 की रात को 23:59 बजे एक औपचारिक संघर्ष-विराम घोषित किया गया था। इस युद्ध में भारत को कश्मीर के कुल भौगोलिक क्षेत्र के लगभग दो तिहाई हिस्से (कश्मीर घाटी, जम्मू और लद्दाख) पर नियंत्रण प्राप्त हुआ, जबकि पाकिस्तान को लगभग एक तिहाई हिस्से पर (पाकिस्तानी गुलाम कश्मीर और गिलगिट-बाल्टिस्तान)।[1]

1965-यह युद्ध भारत - पाकिस्तान के बीच दूसरा युद्ध ऑपरेशन जिब्रॉल्टर के साथ शुरू हुआ, जिसके अनुसार पाकिस्तान की योजना जम्मू कश्मीर में सेना भेजकर वहां भारतीय शासन के विरुद्ध विद्रोह शुरू करने की थी। इसके जवाब में भारत ने भी पश्चिमी पाकिस्तान पर बड़े पैमाने पर सैन्य हमले शुरू कर दिए। सत्रह दिनों तक चले इस युद्ध में हज़ारों की संख्या में जनहानि हुई थी। आखिरकार सोवियत संघ और संयुक्त राज्य द्वारा राजनयिक हस्तक्षेप करने के बाद युद्धविराम घोषित किया गया। 1966 में भारत और पाकिस्तान के प्रधानमंत्रियों ने ताशकन्द समझौते पर हस्ताक्षर किये। कई स्त्रोतों के अनुसार युद्धविराम की घोषणा के समय भारत पाकिस्तान की अपेक्षा मजबूत स्थिति में था।

1971-भारत पाकिस्तान के बीच यह तीसरा युद्ध हुआ। इस युद्ध में 94000 से ज्यादा पाकिस्तानी सैनिकों को बंदी बनाया गया और इस युद्ध में पाक कि हार देखते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका और कई मित्र देशों को साथ लेकर जिसमें ब्रिटेन, चीन, पाक, फ्रांस मुख्य थे और भी देस भारत की ओर बढ़ चले इसकी सूचना सोवियत संघ रूस को मिली और 1948 में रूस और भारत के एक दूसरे की मदद करने के लिए समझौता हुआ था और रूस बिना कुछ सोचे समझे अपनी पूरी ताकत भारत की मदद के लिये भेज दी और आधे देसो को तो रूस ने सीधे चेतावनी देदी कि अगर आप लोगों की तरफ से भारत पे कोई आक्रमण हुआ तो भुगतने के लिए तैयार रहना आधे से ज्यादा देश तो उल्टे पाव वापस चले गए लेकिन अमेरिका, और, ब्रिटेन भारत की ओर निरंतर भारत की ओर बढ़ रहे थे रूस ने रिस्क लेते हुए रेंज में लाने के लिए खुद दुश्मन कि ओर बढ़ा और जैसे ही समुद्र से रूस का पावर लेस को जो समुद्र और आसमान में लड़ने के लिये पर्याप्त था निकलते देख अमेरिका, ब्रिटेन के होश उड़ गये और तुरंत ही वापिस चल दिये तब रूस की मदद से इन्दिरा गांधी जी ने पूरी दुनिया को सन्देश दिया भारत को कमजोर समझने की भूल न करें और तब बांग्लादेश के उदय हुआ एक नया देश "बांग्लादेश की स्थापना हुई थी

1999-1999 में भारत पाकिस्तान का चतुर्थ युद्ध हुआ जिसे कारगिल युद्ध के नाम से जाना जाता है यह युद्ध कारगिल जगह पर हुआ जिससे इसे कारगिल युद्ध कहते है। यह बहुत ठंडा इलाका था जिसमे पाकिस्तान ने कब्जा कर लिया था जब भारत की सेना को पता चला तो उन्होंने इसका मुहताज जवाब दिया और पाकिस्तान पर विजय प्राप्त करी।[2]

दिसंबर २०१३ में इंटरनेशनल फिजिंशंस फॉर द प्रिवेंशन ऑफ न्यूक्लियर वॉर (आईपीपीएनडब्ल्यू) द्वारा जारी एक रिपोर्ट -परमाणु अकाल : दो अरब लोगों को खतरा - में यह कहा गया कि यदि भारत पाकिस्तान में एक और युद्ध हुआ और उसमें परमाणु हथियारों का प्रयोग किया गया तो शायद पृथ्वी पर मानव सभ्यता का ही अंत हो जाएगा। रिपोर्ट के मुताबिक, परमाणु युद्ध वैश्विक

पर्यावरण और कृषि उत्पादन पर इतना बुरा प्रभाव डालेगा कि दुनिया की एक-चौथाई जनसंख्या यानी दो अरब से ज्यादा लोगों की मौत हो सकती है। ऐसा भी हो सकता है कि भारत और पाकिस्तान के साथ ही चीन की भी पूरी की पूरी मानवजाति खत्म हो जाए।

### विचार - विमर्श

1947-1948 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, कभी कभी के रूप में जाना जाता है पहला कश्मीर युद्ध, के बीच लड़ाई हुई थी भारत तथा पाकिस्तान ऊपर से रियासत का जम्मू और कश्मीर 1947 से 1948 तक। यह चार में से पहला था भारत-पाकिस्तान युद्ध दोनों के बीच लड़ाई हुई नव स्वतंत्र राष्ट्र। पाकिस्तान ने आजादी के कुछ हफ्ते बाद ही आदिवासियों को मारकर युद्ध की शुरुआत की लश्कर (मिलिशिया) से वजीरिस्तान, कश्मीर पर कब्जा करने के प्रयास में, जिसका भविष्य अधर में लटका हुआ है। युद्ध का अनिर्णायक परिणाम अभी भी दोनों देशों की भूराजनीति को प्रभावित करता है। 1946-1947 के वर्षों में वृद्धि देखी गई अखिल भारतीय मुस्लिम लीग तथा मुस्लिम राष्ट्रवाद भारत के मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य की मांग करना। मांग ने हिंसक मोड़ ले लिया डायरेक्ट एक्शन डे (१६ अगस्त १९४६) हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अंतर-सांप्रदायिक हिंसा स्थानिक हो गई। नतीजतन, 3 जून 1947 को विभाजित होने का निर्णय लिया गया ब्रिटिश भारत दो अलग-अलग राज्यों में, पाकिस्तान का प्रभुत्व जिसमें मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र और शामिल हैं भारत का प्रभुत्व बाकी को शामिल करना। दो प्रांत पंजाब तथा बंगाल बड़े मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को दोनों प्रभुत्वों के बीच विभाजित किया जाना था। अनुमानित 11 मिलियन लोग अंततः पंजाब के दो हिस्सों के बीच चले गए, और संभवतः अंतर-सांप्रदायिक हिंसा में 1 मिलियन मारे गए। जम्मू और कश्मीर, पंजाब प्रांत से सटे होने के कारण, पंजाब में होने वाली घटनाओं से सीधे प्रभावित होता था। माउंटबेटन की मूल योजना जून 1948 तक दोनों प्रभुत्वों के लिए संयुक्त गवर्नर जनरल पर बने रहने की थी। हालांकि, यह पाकिस्तानी नेता द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था मोहम्मद अली जिन्ना। इस आयोजन में, माउंटबेटन भारत के गवर्नर जनरल के रूप में रहे, जबकि पाकिस्तान ने जिन्ना को अपना गवर्नर जनरल चुना। यह परिकल्पना की गई थी कि सशस्त्र बलों का राष्ट्रीयकरण 15 अगस्त तक पूरा नहीं हो सकता है।<sup>[1]</sup> इसलिए सत्ता के हस्तांतरण के बाद ब्रिटिश अधिकारी रुके रहे। सेवा प्रमुखों को डोमिनियन सरकारों द्वारा नियुक्त किया गया था और उनके लिए जिम्मेदार थे। समग्र प्रशासनिक नियंत्रण, लेकिन परिचालन नियंत्रण नहीं, फील्ड मार्शल के साथ निहित था क्लाउड औचिनलेक, जिसे 'सुप्रीम कमांडर' कहा जाता था, दोनों प्रभुत्वों की एक नवगठित संयुक्त रक्षा परिषद के प्रति जवाबदेह। भारत ने जनरल नियुक्त किया रोब लॉकहार्ट इसके सेना प्रमुख के रूप में और पाकिस्तान ने जनरल नियुक्त किया फ्रैंक मेसर्वी। [3]

दोनों ओर के ब्रिटिश कमांडिंग अधिकारियों की उपस्थिति ने 1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध को एक अजीब युद्ध बना दिया। दोनों कमांडिंग अधिकारी दैनिक टेलीफोन संपर्क में थे और उन्होंने परस्पर रक्षात्मक पदों को अपनाया। रवैया यह था कि "आप उन्हें बहुत मुश्किल से मार सकते हैं लेकिन बहुत कठिन नहीं है, अन्यथा सभी प्रकार के नतीजे होंगे।" लॉकहार्ट और मेसर्वी दोनों को युद्ध के दौरान और उनके उत्तराधिकारियों को बदल दिया गया रॉय बुचर तथा डगलस ग्रेसि अपनी-अपनी सरकारों पर संयम बरतने की कोशिश की। रॉय बुचर भारत में ऐसा करने में स्पष्ट रूप से सफल थे, लेकिन ग्रेसी ने उपज दी और ब्रिटिश अधिकारियों को पाकिस्तान की ओर से परिचालन भूमिकाओं में इस्तेमाल किया। कार्रवाई में एक ब्रिटिश अधिकारी की भी मौत हो गई।

1947 में, जम्मू और कश्मीर की रियासत में जातीय और धार्मिक समुदायों की एक विस्तृत श्रृंखला थी। कश्मीर प्रांत से मिलकर कश्मीर घाटी और यह मुजफ्फराबाद जिला बहुसंख्यक मुस्लिम आबादी (90% से अधिक) थी। जम्मू प्रांतपांच जिलों से मिलकर, पूर्वी जिलों में हिंदुओं और मुसलमानों का एक समान विभाजन था (उधमपुर, जम्मू तथा रियासी) और पश्चिमी जिलों में मुस्लिम बहुमत (मीरपुर तथा पूंछ) है। पहाड़ी लद्दाख जिला (वज़रात) पूर्व में मुस्लिम बहुमत के साथ एक महत्वपूर्ण बौद्ध उपस्थिति थी बाल्टिस्तान। गिलगित एजेंसी उत्तर में भारी मुस्लिम था और महाराजा के साथ एक समझौते के तहत सीधे ब्रिटिश द्वारा शासित था। सत्ता के हस्तांतरण से कुछ समय पहले, अंग्रेजों ने गिलगित एजेंसी को महाराजा को लौटा दिया, जिन्होंने ए डोगरा जिले के लिए राज्यपाल और स्थानीय बलों के लिए एक ब्रिटिश कमांडर।

कश्मीर घाटी में प्रमुख राजनीतिक आंदोलन, द राष्ट्रीय सम्मेलन के नेतृत्व में शेख अब्दुल्ला, धर्मनिरपेक्ष राजनीति में विश्वास किया जाता है। इसके साथ गठबंधन किया गया था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और माना गया कि वह भारत में शामिल होने के पक्ष में है। दूसरी ओर, जम्मू प्रांत के मुसलमानों ने समर्थन किया मुस्लिम सम्मेलन, जिसे संबद्ध किया गया था अखिल भारतीय मुस्लिम लीग और पाकिस्तान में शामिल होने के पक्षधर थे। जम्मू प्रांत के हिंदू भारत के साथ एकमुश्त विलय के पक्षधर थे। डायवर्जन के सभी विचारों के बीच, महाराजा का स्वतंत्र रहने का निर्णय स्पष्ट रूप से एक विवेकपूर्ण था। पहली झड़प हुई थोर 3-4 अक्टूबर 1947 को। 22 अक्टूबर को मुजफ्फराबाद सेक्टर में एक और हमला किया गया। राज्य बल चारों ओर के सीमावर्ती क्षेत्रों में तैनात थे मुजफ्फराबाद तथा डोमेल आदिवासी ताकतों

(कुछ मुस्लिम राज्य सेनाओं ने परस्पर मिल-जुलकर और उनसे जुड़कर) को हराया था और राजधानी का रास्ता खुला था। हमलावरों में, आदिवासियों के रूप में प्रच्छन्न पाकिस्तानी सेना के कई सैनिक थे। उन्हें पाकिस्तान सेना द्वारा रसद सहायता भी प्रदान की गई थी। राज्य की सेनाओं को फिर से संगठित करने या मजबूत होने से पहले श्रीनगर की ओर आगे बढ़ने के बजाय, हमलावर सेनाएँ सीमावर्ती क्षेत्र के कब्जे वाले शहरों में अपने निवासियों के खिलाफ लूटपाट और अन्य अपराधों में लिप्त रहीं। में पुंछ घाटी, राज्य की सेनाएं उन शहरों में पीछे हट गईं जहां उन्हें घेर लिया गया था।[4] परिग्रहण के बाद, भारत ने लेफ्टिनेंट कर्नल की कमान के तहत श्रीनगर में सैनिकों और उपकरणों को एयरलिफ्ट किया। दीवान रंजीत राय, जहां उन्होंने रियासत की सेनाओं को मजबूत किया, एक रक्षा परिधि की स्थापना की और शहर के बाहरी इलाके में जनजातीय बलों को हराया। प्रारंभिक रक्षा कार्यों में उल्लेखनीय रक्षा शामिल थी बड़गाम अत्यधिक बाधाओं के खिलाफ रात भर में राजधानी और हवाई क्षेत्र दोनों को पकड़ना। सफल रक्षा में भारतीय द्वारा एक युद्धाभ्यास युद्धाभ्यास शामिल था बख्तरबंद कारें Shalateng की लड़ाई के दौरान। पराजित आदिवासी ताकतों का पीछा किया गया था बारामूला तथा उरी और इन शहरों को भी हटा दिया गया।पुंछ घाटी में, आदिवासी ताकतें राज्य बलों को घेरना जारी रखा।

में गिलगितराज्य अर्धसैनिक बलों, को बुलाया गिलगित स्काउट्सउस हमलावर आदिवासी सेना में शामिल हो गया, जिसने राज्य के इस उत्तरी क्षेत्र का नियंत्रण प्राप्त किया। आदिवासी ताकतें भी सैनिकों से जुड़ गईं चित्राल, जिसका शासक, मुजफ्फर उल-मुल्क चितराल के मेहतर ने पाकिस्तान में प्रवेश किया था।

भारतीय सेनाओं ने उरी और बारामूला पर कब्जा करने के बाद आदिवासी बलों का पीछा बंद कर दिया, और ए राहत स्तंभ दक्षिण की ओर, पुंछ को राहत देने के प्रयास में। हालांकि राहत स्तंभ अंततः पुंछ तक पहुंच गया, लेकिन घेराबंदी को उठाया नहीं जा सका। एक दूसरा राहत स्तंभ पहुंचा कोटली, और उस शहर और अन्य लोगों के गैरासनों को खाली कर दिया, लेकिन इसका बचाव करने के लिए इसे बहुत कमजोर होने के लिए छोड़ दिया गया। इस बीच, 25 नवंबर 1947 को पाकिस्तान की मदद से मीरपुर को कबायली सेनाओं ने पकड़ लिया PAVO कैवलरी। इसी के चलते 1947 मीरपुर नरसंहार जहाँ हिंदू महिलाओं का कथित तौर पर आदिवासी सेना द्वारा अपहरण कर लिया गया और उन्हें पाकिस्तान ले जाया गया। उन्हें रावलपिंडी के वेश्यालयों में बेचा गया था। मीरपुर में लगभग 400 महिलाओं ने कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली और उनका अपहरण कर लिया गया।आदिवासी ताकतों ने झंगर पर हमला किया और कब्जा कर लिया। फिर उन्होंने नोशेरा पर असफल हमला किया, और उन पर असफल हमलों की एक श्रृंखला बनाई उरी। दक्षिण में एक छोटे से भारतीय हमले ने चंबल को सुरक्षित कर दिया। युद्ध के इस चरण तक भारतीय सेना उपलब्ध होते ही अग्रिम पंक्ति को स्थिर करना शुरू कर दिया।भारतीय सेनाओं ने दक्षिण में झंझार और राजौरी को हटाकर एक पलटवार शुरू किया। कश्मीर घाटी में कबायली सेना ने उरी पर हमला जारी रखा गढ़ में सेना। उत्तर में स्कर्टू गिलगित स्काउट्स द्वारा घेराबंदी के तहत लाया गया था।[5]

लंबी वार्ता के बाद, दोनों देश संघर्ष विराम के लिए सहमत हुए। संघर्ष विराम की शर्तें, एक में रखी गई संयुक्त राष्ट्र आयोग 13 अगस्त 1948 को संकल्प, 5 जनवरी 1949 को आयोग द्वारा अपनाया गया। इसके लिए पाकिस्तान को अपनी सेना को वापस लेने की आवश्यकता थी, दोनों नियमित और अनियमित, जबकि भारत ने कानून और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए राज्य के भीतर न्यूनतम बलों को बनाए रखने की अनुमति दी। इन शर्तों के अनुपालन पर, ए जनमत-संग्रह क्षेत्र के भविष्य का निर्धारण करने के लिए आयोजित किया जाना था।

1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध को भारतीय इतिहास में मात्र हाशिए की जगह मिलती है। लोगों की यादों में भी उस युद्ध की वो जगह नहीं है जो शायद 1962 के भारत-चीन युद्ध या 1971 के बांगलादेश युद्ध की है।कारण शायद ये है कि इस लड़ाई से न तो हार की शर्मसारी जुड़ी है और न ही निर्णायक जीत का उन्माद.6 सितंबर 1965 को भारतीय सेना ने वेस्टर्न फ्रंट पर अंतरराष्ट्रीय सीमा को लांघते हुए आधिकारिक तौर पर युद्ध का बिगुल बजा दिया था. इस दिन को पाकिस्तान में 'डिफेन्स ऑफ़ पाकिस्तान डे' मनाया जाता है और इस अवसर पर जीत का जुलूस भी निकाला जाता है.हालांकि भारत का मानना है कि इस युद्ध में जीत भारत की ही हुई थी.घटना के 52 साल बाद भी इस युद्ध की तस्वीरें या तो ज़हन से पूरी तरह मिट जाती हैं या धुंधली पड़ जाती हैं. लेकिन इससे एक फ़ायदा भी होता है. बीता हुआ समय तस्वीर को एक बेहतर परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है.बीबीसी हिंदी की संपादकीय टीम की बैठक में 1965 के युद्ध के पचास साल होने पर कवरेज की बात हो रही थी तो हमारे संपादक का सुझाव था- "क्यों न युद्ध के 22 दिनों से जुड़ी 22 कहानियों पर काम किया जाए जिनके बारे में लोगों को या तो बिल्कुल पता नहीं है या बहुत कम पता है". लेकिन ये कोई आसान काम नहीं था. वो जमाना इंटरनेट का नहीं था कि हर चीज़ गूगल पर मिल जाए. लेकिन काम शुरू हो चुका था- पुस्तकालय खंगाले गए, सैकड़ों किताबें पढ़ी गईं, अभिलेखागार में जाकर कभी गोपनीय रहे दस्तावेज़ों पर नज़र दौड़ाई गई. इतना ही नहीं, सैनिक केंद्रों पर जाकर 50 साल पुरानी युद्ध डायरियों को भी हमने पलटा.[6]

लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत थी लड़ाई में शामिल अफसरों को तलाशना और उन्हें बात करने के लिए राजी करना क्योंकि एक तो उनमें से बहुत से लोग अब इस दुनिया में नहीं रहे, जो हैं भी वो बहुत उम्रदराज़ हो चले हैं, उनकी सेहत और याददाश्त ने भी उनका साथ छोड़ना शुरू कर दिया है।

बहरहाल, इस पूरे अभियान में 47 लोगों से आमने-सामने बात की गई और न जाने कितने लोगों से फ़ोन पर. इनसे मिलने के लिए भारत के कई शहरों में जाना हुआ. बात केवल इस ओर की नहीं थी, पाकिस्तान के भी कई सैनिक अफसरों को ढूँढ निकाला गया, उन्होंने भी रोमांचित कर देने वाले अनुभव सुनाए.

पाकिस्तानी एयर कोमोडोर सज्जाद हैदर ने बताया कि पठानकोट पर हमला करने से पहले उन्होंने एक बाल्टी में पानी भरवा कर उसमें ईयू-डे-कोलोन की पूरी बोतल खाली कर दी. आठ तौलिये मंगवाए गए. आपरेशन में शामिल सभी आठ पायलटों से कहा कि वो इस सुगंधित पानी में तौलिये भिगोकर अपना मुँह पोछ लें ताकि अगर अल्लाह से मिलने का मौक़ा आ जाए तो उनके जिस्म से खुशबू आए.

तारापोर की अंतिम इच्छा, उसी तरह चविंडा की लड़ाई के बीचोंबीच कर्नल तारापोर ने अपने साथी मेजर चीमा को निर्देश दिया कि अगर इस लड़ाई के दौरान वे इस दुनिया में न रहें तो उनका अंतिम संस्कार युद्ध के मैदान पर ही किया जाए.

'मेरी प्रेयर बुक मेरी मां को दे दी जाए. मेरी अंगूठी मेरी पत्नी को और मेरा फ़ाउंटैन पेन मेरे बेटे ज़र्ज़ीस को दे दिया जाए.' पांच दिन बाद तारापोर एक पाकिस्तानी टैंक गोले के शिकार हुए. उन्हें मरणोपरांत भारत का वीरता का सबसे बड़ा पदक परमवीर चक्र दिया गया.

उस लड़ाई में भारत की ओर से शरीक कैप्टन अजय सिंह ने बताया कि कुछ लोगों ने कहा कि अगर कर्नल तारापोर का अंतिम संस्कार लड़ाई के मैदान में किया जाता है तो चिता से उठते धुँएँ को देखकर पाकिस्तानी टैंक उन पर फ़ायर करेंगे.[7]

लेकिन उनकी यूनिट ने तय किया कि चाहे जो हो जाए, पाकिस्तान के कितने ही गोले उनके ऊपर आएँ, तारापोर की अंतिम इच्छा का सम्मान किया जाएगा. तारापोर की अंत्येष्टि पाकिस्तानी सेना के आग उगलते गोलों के बीच लड़ाई के मैदान में ही की गई. युद्ध के अधिकतर ब्योरों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया जाता है. इस सीरीज़ में इससे बचने की कोशिश की गई है. लड़ाइयों में भी गलतियाँ होती हैं. 1965 की लड़ाई में भी गलतियाँ हुईं, दोनों पक्षों की ओर से.

इन्हें छिपाने की कोशिश नहीं की गई है. ऐसे भी मौक़े आए जब एक पक्ष ने दूसरे पक्ष के सैनिकों के कारनामों की तारीफ़ की है. ये बताता है कि सैनिक बहादुरी का सम्मान करते हैं, चाहे वो दुश्मन की ही क्यों न हो.

शमा जलती रहे तो बेहतर

यह सिरीज़ आपको 52 साल पहले हुए उस भारत पाकिस्तान युद्ध की ओर ले जाएगी जहाँ से बहुत से सैनिक कभी वापस नहीं लौटे, कुछ वापस आए जीवट की दास्तान लेकर.

इस लड़ाई के नायकों की कहानी सुनने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें जिसे हम बहुत परिश्रम के बाद आप तक लेकर आए हैं. हमारा मक़सद न तो किसी का कीर्तिगान करना है और न ही किसी को सही या ग़लत ठहराना, सैनिकों की कहानियों के ज़रिए पूरी तस्वीर आपके सामने पेश करना चाहते हैं. हमारी ये कोशिश कितनी कामयाब रही, ये हमें बताइगा जरूर.

बहरहाल, साहिर लुधियानवी की नज़्म बरबस याद आती है--

टैंक आगे बढ़ें या पीछे हटें,

कोख धरती की बाँझ होती है.

फ़तह का ज़श्र हो या हार का सोग,

जिंदगी मयत्तों पर रोती है.

इसलिए ऐ शरीफ़ इंसानों,

जंग टलती रहे तो बेहतर है.

आप और हम सभी के आंगन में,

शमा जलती रहे तो बेहतर है.

1971 भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तान को बड़ी हार का सामना करना पड़ा।<sup>[24]</sup> पूर्वी पाकिस्तान आजाद हो गया और बांग्लादेश के रूप में एक नया देश बना। 16 दिसंबर को ही पाकिस्तानी सेना ने सरेंडर किया था।[8]

१९७१ का भारत-पाक युद्ध भारत एवं पाकिस्तान के बीच एक सैन्य संघर्ष था। इसका आरम्भ तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान के स्वतंत्रता संग्राम के चलते ३ दिसंबर, १९७१ से दिनांक १६ दिसम्बर, १९७१ को हुआ था एवं ढाका समर्पण के साथ समापन हुआ था। युद्ध का आरम्भ पाकिस्तान द्वारा भारतीय वायुसेना के ११ स्टेशनों पर रिक्तिपूर्व हवाई हमले से हुआ, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सेना पूर्वी पाकिस्तान में बांग्लादेशी स्वतंत्रता संग्राम में बंगाली राष्ट्रवादी गुटों के समर्थन में कूद पड़ी। मात्र १३ दिन चलने वाला यह युद्ध इतिहास में दर्ज लघुतम युद्धों में से एक रहा।

युद्ध के दौरान भारतीय एवं पाकिस्तानी सेनाओं का एक ही साथ पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों फ़्रंट पर सामना हुआ और ये तब तक चला जब तक कि पाकिस्तानी पूर्वी कमान ने समर्पण अभिलेख पर<sup>[29]</sup> १६ दिसम्बर, १९७१ में ढाका में हस्ताक्षर नहीं कर दिये, जिसके

साथ ही पूर्वी पाकिस्तान को एक नया राष्ट्र बांग्लादेश घोषित किया गया। लगभग ~१०,०००<sup>[30]</sup> से ~१३,००० पाकिस्तानी सैनिकों को भारतीय सेना द्वारा युद्ध बन्दी बनाया गया था। इनमें ७९,६७६ से ९१,००० तक पाकिस्तानी सशस्त्र सेना के वर्दीधारी सैनिक थे, जिनमें कुछ बंगाली सैनिक भी थे जो पाकिस्तान के वफ़ादार थे। शेष १०,३२४ से १५,००० युद्धबन्दी वे नागरिक थे, जो या तो सैन्य सम्बन्धी थे या पाकिस्तान के सहयोगी (रज़ाकर) थे। एक अनुमान के अनुसार इस युद्ध में लगभग ३०,००० से ३ लाख बांग्लादेशी नागरिक हताहत हुए थे। इस संघर्ष के कारण, ८०,००० से लगभग १ लाख लोग पड़ोसी देश भारत में शरणार्थी रूप में घुस गये। एडमिरल सैयद मुहम्मद एहसान और लेफ़्टि.जनरल साहबज़ादा याकूब खान के त्यागपत्र दे देने के बाद, मीडिया के समाचारों में पाकिस्तानी सेना के बंगाली नागरिकों के व्यापक नरसंहार को, जिसमें विशेष तौर पर निशाना बने अल्पसंख्यक हिन्दू समुदाय थे; को बड़ा स्थान मिला। इसके परिणामस्वरूप इस समुदाय को पड़ोसी देश पूर्वी भारत में शरण लेने हेतु भागना पड़ा। इस शरणार्थियों के लिये पूर्वी भारत की सीमाओं को भारत सरकार द्वारा खोल दिया गया। इन्हें शरण देने हेतु निकटवर्ती भारतीय राज्य सरकारों, जैसे पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, मेघालय एवं त्रिपुरा सरकारों द्वारा बड़े स्तर पर सीमावर्ती क्षेत्रों में शरणार्थी कैम्प भी लगाये गए। इस तेजी से भागते पूर्वी पाकिस्तानी शरणार्थी जनसमूह द्वारा भारत में घुस जाने के कारण भारत की पहले ही बोझिल अर्थव्यवस्था पर असहनीय भार पड़ा।

युद्ध के बाद, पूर्व के पाकिस्तानी सेना जनरलों में एक दूसरे पर पिछले दिनों किये गए प्रतिबद्ध अत्याचारों के लिये एक दूसरे पर दोषारोपण का काम शुरू हो गया, किन्तु अधिकतर दोष लेफ़्टि.जनरल टिक्का खान के सिर मढ़े गए, जिसे पूर्वी पाकिस्तान के गवर्नर होने के कारण अधिकतम उत्तरदायित्व उठाना था। उसे बंगाल का कसाई, आदि संज्ञाएं दी गयीं, क्योंकि अधिकतर अत्याचार के कार्य उसके नेतृत्व में हुए थे। अपने समकालीन साहबज़ादा याकूब खान, जो अपेक्षाकृत शांतिप्रिय था एवं बल प्रयोग में कम विश्वास रखता था, उससे भिन्न टिक्का खान को विवादों के निपटारे हेतु बल प्रयोग करने को आतुर कहा जाता था।[9]

युद्ध जांच आयोग की सुनवाईयों में अपने अपराध-स्वीकारोक्ति में, लेफ़्टि.जनरल आमिर अब्दुल्ला खान नियाज़ी ने उसके कार्यकलापों पर टिप्पणी करते हुए लिखा: "२५/२६ मार्च १९७१ के बीच की रात को जन.टिक्का खान ने आक्रमण किया। तब वह शांतिपूर्ण रात्रि एक विलाप, चित्कार और आगज़नी भरी रात में बदल गयी। जन.टिक्का ने अपनी ओर से किसी हमले की तरह कोई कसर नहीं छोड़ी थी, जैसे वे किसी शत्रु पर हमला कर रहे हों, न कि अपने ही दिशाभ्रमित एवं गुमराह लोगों पर। यह सैन्य कार्रवाई पूर्ण क्रूरता एवं नृशंसता भरी थी, जो निर्दयता में चंगेज़ खान एवं हलाकू खान द्वारा बुखारा और बग़दाद में किये गए भयंकर नरसंहार से कहीं अधिक थे...जनरल टिक्का ने नागरिकों की हत्या करवायी और तप्त भूमि नीति अपनायी। अपनी टुकड़ियों के लिये उनके आदेश थे: मुझे भूमि चाहिये न कि आदमी..."। मेजर जनरल राव फ़रमान अली ने अपनी दैनिक डायरी में लिखा है: "पूर्वी पाकिस्तान की हरित भूमि को रक्त कर देंगे। इसे बंगाली रक्त से लाल कर दिया।"<sup>[72]</sup> हालांकि राव फ़रमान ने इस टिप्पणी का जोरदार विरोध करते हुए १९७४ की युद्ध जांच समिति के आगे स्वीकारोक्ति में सारा उत्तरदायित्व टिक्का खान पर डाल दिया। भारत सरकार द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से बारम्बार अपील की गयी, किन्तु भारतीय विदेश मन्त्री स्वरण सिंह के विभिन्न देशों के विदेश मंत्रियों से भेंट करने के बावजूद भी कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं प्राप्त हुई। तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी ने २७ मार्च १९७१ को पूर्वी पाकिस्तान के मुक्ति संघर्ष के लिये अपनी सरकार के पूर्ण समर्थन देते हुए कहा कि लाखों शरणार्थियों को भारत में शरण देने से कहीं बेहतर है कि पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध कर इस संघर्ष को विराम दिया जाए। २८ अप्रैल १९७१ को इन्दिरा गाँधी मंत्रिमण्डल ने भारतीय तत्कालीन सेनाध्यक्ष सैम मानेकशॉ को पूर्वी पाकिस्तान को कूच करने का आदेश दिया। पूर्वी पाकिस्तानी सेना से विलग हुए अधिकारियों एवं भारतीय रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) के घटकों द्वारा तुरन्त ही भारतीय शरणार्थी शिविरों से मुक्तिबाहिनी के गुरिल्लाओं हेतु पाकिस्तान के विरुद्ध प्रशिक्षण देने के लिये एवं भर्ती का काम आरम्भ कर दिया गया। १९७१ में, पूर्व में भारत समर्थित बांग्लादेशी राष्ट्रवाद की सशक्त लहर फैल गयी थी। इसके बाद ही स्थिति अहिंसात्मक होती गयी और व्यवस्थित रूप से पूर्व में रह रहे बहु-जातीय पाकिस्तानियों की लक्ष्य बना कर हत्याएं करनी आरम्भ हो गयीं। पाकिस्तान के राष्ट्रभक्त बंगाली राजनीतिज्ञों की वाहन में बम लगाकर हत्याएं तथा सरकारी सचिवालयों में उच्च पदासीनों को लक्ष्य बनाने व हत्या करने के कार्य तेजी से दिखाई देने लगे थे। फीनिश आतंकवाद रिपोर्टर जुस्सी हान्हीमाकी के अनुसार पूर्व का बंगाली उग्रवाद कुछ-कुछ "एक भुला दिये गए आतंकवाद के इतिहास" की भांति था। हमुदूर रहमान आयोग ने बंगाली उग्रवाद के दावों का समर्थन करते हुए लिखा कि बहु-जातीय पाकिस्तानियों से हुए दुर्व्यहवार ने पाकिस्तानी सैनिकों को अहिंसा की ओर उक्साया जिससे कि वे अपने लोगों का बदला लेकर सरकार के आदेशों का पालन करने में सहायक हो सकें।[10]

पाकिस्तानी मीडिया का मनोभाव भी तेजी से बदलते हुए युद्ध-प्रिय एवं पूर्व पाकिस्तान तथा भारत के विरुद्ध सैन्यवादी होता जा रहा था। हालांकि कुछ पाकिस्तानी मीडिया विद्वानों की भाषा इन पूर्व की गतिविधियों की रिओपर्ट देते हुए, मिली-जुली भी दिखाई देती थी। सितम्बर १९७१ के अंत तक संभवतः पाकिस्तान सरकार के अंदरूनी घटकों के समर्थन से एक संगठित प्रचार अभियान चालू हो चुका था, जिसके परिणामस्वरूप क्रश इण्डिया आदि सन्देश वाले स्टीकरों को वाहनों के पीछे लगाया जाने लगा। ये अभियान रावलपिण्डी, इस्लामाबाद एवं लाहौर से आरम्भ होते हुए शीघ्र ही पूरे पश्चिमी पाकिस्तान में फैलता चला गया। अक्टूबर माह तक अन्य स्टीकरों में 'हैंग द ट्रेटर (देशद्रोही को फ़ांसी दो) भी दिखाई देने लगा जो शेख मुजीबुर्रहमान के सन्दर्भ में था दिसम्बर के अंत

तक कुछ रूढ़िवादी प्रिंट मीडिया ने "जिहाद" संबंधी पाठ्य सामग्री को छापना भी आरम्भ कर दिया जिससे सेना में भर्ती प्रक्रिया को बढ़ावा मिले।

अब तक के चोरी-छिपे हमलों में मुँह की खाने के बाद एवं उसके परिणामस्वरूप भारतीय हमलों में हानि के बाद अब पाकिस्तान ने रक्षात्मक रुख अपना लिया जिसके चलते युद्ध क्जैसे जैसे बढ़ता गया भारतीय वायु सेना ने प्रत्येक मोर्चे पर पाकिस्तानी वायु सेना को कड़ी टक्कर दी और अब पाकिस्तान के द्वारा हमले दिन-प्रतिदिन घटते जा रहे थे। भारतीय वायुसेना ने लगभग ४००० से अधिक उड़ानें भरीं जबकि पाक वायुसेना ने उसकी जवाबी कार्रवाई नामलेवा ही की, जिसका आंशिक कारण गैर-बंगाली तकनीकी लोगों की अति-न्यून उपलब्धि भी रही।

इस तरह युद्ध में पीछे हटने का उत्तरदायी, पाक वायु मुख्यालय के अपने नुकसान को कम करने के निर्णय को भी टहराया जाता है; क्योंकि बांग्लादेश मुक्ति संघर्ष के दौरान भी भारी हानि उठायी थीं। पाक वायु सेना ने भारतीय वायुसेना के द्वारा कराची बंदरगाह को दो बार भारी नुकसान पहुंचाये जाने के बाद भारतीय नौसेना से सम्पर्क लगभग बंद ही कर दिये, किन्तु पाक वायुसेना ने इसके बदले में ओखा बंदरगाह पर हमला बोला एवं उन ईंधन भण्डारों को नष्ट किया जिसने पाक पर हमला करने वाली नावें आदि आपूर्ति लेती थीं। इधर पूर्व में नं.१४ स्वाइज़न टेल चॉपर्स जो स्काइज़न लीडर परवेज़ मेहन्दी कुरैशी, जिन्हें युद्ध बंदी बना लिया गया था, के नेतृत्व में थी, उसको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। इसके बाद ढाका की पाक वायु सुरक्षा समाप्त होने से पूर्व में भारत का अधिकार सिद्ध हो गया। युद्ध के अंत तक, पाक वायुसेना के विमानचालक पूर्वी पाकिस्तान से पड़ोसी देश बर्मा में बच निकले, एवं बहुत से पाक वायुसेना के लोग पूर्व से बर्मा के लिये ढाका के भारतीय अधिकृत होने से पूर्व ही पलायन कर चुके थे। [11]

2 जुलाई 1972 को, भारत-पाकिस्तानी शिखर शिमला, हिमाचल प्रदेश में शिमला में आयोजित किया गया था, भारत में शिमला समझौता पर हस्ताक्षर किए गए थे और राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो और प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के बीच हर राज्य की एक सरकार एक डिपॉजिटरी भूमिका निभाते थे। इस संधि ने बांग्लादेश को बीमा प्रदान किया था कि पाकिस्तान ने पाकिस्तानी सैनिकों की वापसी के बदले बांग्लादेश की संप्रभुता को मान्यता दी थी क्योंकि भारत 1975 में जेनेवा कन्वेंशन के अनुसार युद्ध कैदियों के साथ व्यवहार कर रहा था। केवल पांच महीनों में, भारत ने लेफ्टिनेंट-जनरल ए.के. के साथ व्यवस्थित रूप से 90,000 से अधिक युद्ध कैदियों को जारी किया। नियाज़ी पाकिस्तान को सौंपे जाने वाले अंतिम युद्ध कैदी हैं। इस संधि ने 13,000 वर्ग किमी से भी ज्यादा जमीन वापस कर दी जो युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तान में जब्त की थी, हालांकि भारत ने कुछ रणनीतिक क्षेत्र (तुरतुक, थांग, त्याक्षी (पूर्वी तियाक्षी) और चोरबत घाटी के चुलुंका सहित) को बरकरार रखा है, जो कि 804 वर्ग किमी से अधिक था। भारतीय कट्टरपंथियों ने हालांकि महसूस किया कि यह संधि राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो के लिए बहुत ही उदार थी, जिन्होंने उदारता के लिए अनुरोध किया था, उनका तर्क था कि अगर पाकिस्तान में नाजुक स्थिरता कम हो जाती तो समझौता पाकिस्तानियों द्वारा अत्यधिक कठोर होने के रूप में माना जाता था और वह आरोपी होगा पूर्वी पाकिस्तान के नुकसान के अलावा कश्मीर को खोने का। जिसके परिणामस्वरूप प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की भूटो की 'भीठी बात और झूठी शपथ' के विश्वास के लिए भारत के एक सेक्शन की आलोचना की गई, जबकि अन्य खंड ने दावा किया कि इसे "वर्साइल सिंड्रोम" जाल में गिरने के लिए सफल नहीं होने के कारण।

संयुक्त राज्य पाकिस्तान के प्रति नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं, भौतिक रूप से समर्थन में रहा एवं तत्कालीन यू.एस राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन एवं उनके राज्य सचिव हेनरी किसिन्जर ने इस वृहत स्तर के सिविल युद्ध को रोकने हेतु हस्तक्षेप करने के लिये एक आशापूर्ण प्रयास से एकदम मना कर दिया। सं.राज्य इस भुलावे में रहा कि उन्हें दक्षिण एशिया में भारत के साथ सोवियत प्रभाव एवं अनौपचारिक मैत्री को इस प्रकार रोकने में पाकिस्तान की आवश्यकता होगी। शीत युद्ध के समय पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र का एक औपचारिक साथी रहा था उसके चीन के संग भी घनिष्ठ सम्बन्ध रहे थे, जिनके द्वारा सं.राज्य चीनी-अमेरिकी मेल-मिलाप को बढ़ावा देने हेतु निक्सन फरवरी १९७२ में यहां की यात्रा करने को भी उत्सुक था।<sup>[148]</sup> निक्सन को यह भय था कि पाक पर भारतीय आक्रमण इस क्षेत्र में सोवियत वर्चस्व को बढ़ावा देगा, जिससे सं.राज्य की वैश्विक सत्ता स्थिति पर एवं साथ ही अमेरिका की यहां क्षेत्रीय स्थिति पर और उनके नये साथी चीन के संग उनके सम्बन्ध पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। निक्सन ने जॉर्डन एवं ईरान को पाकिस्तान की सहायता के लिये सैन्य सहायता भेजने पर जोर दिया तथा चीन को भी पाकिस्तान के लिये हथियार भेजने पर जोर दिया, हालांकि ये सभी आपूर्तियां बहुत सीमित रहीं। निक्सन प्रशासन द्वारा पाक सेना द्वारा पूर्वी पाकिस्तान में किये जा रहे नरसंहार की रिपोर्ट्स की भी अवहेलना की गयी, जिसकी यूनाइटेड स्टेट्स काँग्रेस तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस द्वारा कड़ी निन्दा की गयी। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत जॉर्ज बुश, सीनियर ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत-पाक के बीच युद्ध-बन्दी करने और दोनों को अपनी-अपनी सेनाएं हटाने के लिये एक प्रस्ताव रखा। [12]

कारगिल युद्ध, जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है, भारत और पाकिस्तान के बीच मई और जुलाई 1999 के बीच कश्मीर के कारगिल जिले में हुए सशस्त्र संघर्ष का नाम है।

पाकिस्तान की सेना और कश्मीरी उग्रवादियों ने भारत और पाकिस्तान के बीच की नियंत्रण रेखा पार करके भारत की ज़मीन पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। पाकिस्तान ने दावा किया कि लड़ने वाले सभी कश्मीरी उग्रवादी हैं, लेकिन युद्ध में बरामद हुए दस्तावेज़ों और पाकिस्तानी नेताओं के बयानों से साबित हुआ कि पाकिस्तान की सेना प्रत्यक्ष रूप में इस युद्ध में शामिल थी। लगभग 30,000 भारतीय सैनिक और करीब 5000 घुसपैठिए इस युद्ध में शामिल थे। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के

कब्जे वाली जगहों पर हमला किया और धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से पाकिस्तान को सीमा पार वापिस जाने को मजबूर किया। यह युद्ध ऊँचाई वाले इलाके पर हुआ और दोनों देशों की सेनाओं को लड़ने में काफ़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। परमाणु बम बनाने के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ यह पहला सशस्त्र संघर्ष था। भारत ने कारगिल युद्ध जीता। पाकिस्तान में इस युद्ध के कारण राजनैतिक और आर्थिक अस्थिरता बढ़ गई और नवाज़ शरीफ़ की सरकार को हटाकर परवेज़ मुशर्रफ़ राष्ट्रपति बन गए। दूसरी ओर भारत में इस युद्ध के दौरान देशप्रेम का उबाल देखने को मिला और भारत की अर्थव्यवस्था को काफ़ी मजबूती मिली। भारतीय सरकार ने रक्षा बजट और बढ़ाया। इस युद्ध से प्रेरणा लेकर कई फ़िल्में बनीं जिनमें एल ओ सी कारगिल, लक्ष्य और धूप मुख्य हैं। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ और सेना प्रमुख जहांगीर करामात के बीच १९९८ के करीब, मतभेद बढ़ गये थे। करामात की सेवानिवृत्ति के पश्चात किसे सेना प्रमुख बनाया जाय इस बात पर भी बहस चल रही थी। नवाज़ शरीफ़ ने एक आमसभा में अपने ऊपर की गई टीका-टिप्पणी से गुस्सा होकर करामात ने सेना प्रमुख पद से इस्तिफा दे दिया। नवाज़ शरीफ़ ने जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ को सेना प्रमुख के पद पर नियुक्त किया। 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। इस दिन को हर वर्ष विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। करीब दो महीने तक चला कारगिल युद्ध भारतीय सेना के साहस और जांबाजी का ऐसा उदाहरण है जिस पर हर भारतीय देशवासी को गर्व होना चाहिए। करीब 18 हजार फीट की ऊँचाई पर कारगिल में लड़ी गई इस जंग में देश ने लगभग 527 से ज्यादा वीर योद्धाओं को खोया था वहीं 1300 से ज्यादा घायल हुए थे। युद्ध में २७०० पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और २५० पाकिस्तानी सैनिक जंग छोड़ के भाग गए। [13] वैसे तो पाकिस्तान ने इस युद्ध की शुरुआत 3 मई 1999 को ही कर दी थी जब उसने कारगिल की ऊँची पहाड़ियों पर 5,000 सैनिकों के साथ घुसपैठ कर कब्जा जमा लिया था। इस बात की जानकारी जब भारत सरकार को मिली तो सेना ने पाक सैनिकों को खदेड़ने के लिए ऑपरेशन विजय चलाया। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के खिलाफ मिग-27 और मिग-29 का भी इस्तेमाल किया। इसके बाद जहाँ भी पाकिस्तान ने कब्जा किया था वहाँ बम गिराए गए। इसके अलावा मिग-29 की सहायता से पाकिस्तान के कई ठिकानों पर आर-77 मिसाइलों से हमला किया गया। इस युद्ध में बड़ी संख्या में रॉकेट और बमों का इस्तेमाल किया गया। इस दौरान करीब दो लाख पचास हजार गोले दागे गए। वहीं 5,000 बम फायर करने के लिए 300 से ज्यादा मोर्टार, तोपों और रॉकेटों का इस्तेमाल किया गया। युद्ध के 17 दिनों में हर रोज प्रति मिनट में एक राउंड फायर किया गया। बतायाक ऐसा युद्ध था जिसमें दुश्मन देश की सेना पर इतनी बड़ी संख्या में बमबारी की गई थी।

### परिणाम

भारत-पाकिस्तान संबंध (हिंदी : भारत-भारत संबंध ; उर्दू : بھارت پاکستان تعلقات ) भारत गणराज्य और पाकिस्तान के इस्लामी गणराज्य के बीच द्विपक्षीय संबंधों को संदर्भित करता है । कई ऐतिहासिक और राजनीतिक घटनाओं के कारण दोनों देशों के बीच संबंध जटिल और काफ़ी हद तक शत्रुतापूर्ण रहे हैं। 1947 में ब्रिटिश भारत के हिंसक विभाजन से दोनों राज्यों के बीच संबंधों को परिभाषित किया गया है, जिसने कश्मीर संघर्ष की शुरुआत की, और दोनों देशों के बीच कई सैन्य संघर्ष हुए। नतीजतन, उनके रिश्ते दुश्मनी और संदेह से ग्रस्त हो गए हैं। उत्तरी भारत और पाकिस्तान कुछ जनसांख्यिकी और साझा लिंगुआ फ्रैंक (मुख्य रूप से पंजाबी, सिंधी और हिंदुस्तानी ) में कुछ हद तक ओवरलैप करते हैं। 2010 की शुरुआत में भारत और पाकिस्तान दोनों में नई सरकारों के चुनाव के बाद से, संबंधों में सुधार के लिए कुछ प्रयास किए गए हैं, विशेष रूप से पारस्परिक आधार पर गैर-भेदभावपूर्ण बाजार पहुंच (एनडीएमएआरबी) की स्थिति के समझौते पर आम सहमति का विकास प्रत्येक के लिए अन्य, जो व्यापार को उदार बनाएगा। [11] भारत और पाकिस्तान दोनों दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ और इसके दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र के सदस्य हैं । [14] पाकिस्तान वार्षिक भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में एक मंडप की मेजबानी करता था जिसमें भारी भीड़ उमड़ती थी। दोनों देशों के बीच बिगड़ते संबंधों के परिणामस्वरूप व्यापार मेले में पाकिस्तानी व्यापारियों का बहिष्कार हुआ। नवंबर 2015 में, भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और पाकिस्तानी प्रधान मंत्री नवाज़ शरीफ़ द्विपक्षीय वार्ता को फिर से शुरू करने के लिए सहमत हुए; अगले महीने, मोदी ने भारत के रास्ते में पाकिस्तान की एक संक्षिप्त, अनिर्धारित यात्रा की, 2004 के बाद से पाकिस्तान की यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधान मंत्री बने। उन प्रयासों के बावजूद, देशों के बीच संबंध खराब बने हुए हैं, बार-बार कृत्यों के बाद सीमा पार आतंकवाद । 2017 बीबीसी वर्ल्ड सर्विस पोल के अनुसार, केवल 5% भारतीय पाकिस्तान के प्रभाव को सकारात्मक रूप से देखते हैं, 85% नकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं, जबकि 11% पाकिस्तानी भारत के प्रभाव को सकारात्मक रूप से देखते हैं, 62% नकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं। [15]

### निष्कर्ष

कुछ भारतीय और पाकिस्तानी लोग कभी-कभी सीमा पार से शादी करते हैं। प्रवासी भारतीयों में कई भारतीय और पाकिस्तानी, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में, अंतर्जातीय विवाह करते हैं, क्योंकि दोनों देशों के बीच क्रमशः बड़ी सांस्कृतिक समानताएं हैं। [16]

अप्रैल 2010 में एक हाई-प्रोफाइल पाकिस्तानी क्रिकेटर, शोएब मलिक ने भारतीय टेनिस स्टार सानिया मिर्जा से शादी की । इस शादी को मीडिया का बहुत अधिक ध्यान आकर्षित किया गया और कहा गया कि भारत और पाकिस्तान दोनों में इसका नाम बदल



गया है। 2001 के गुजरात भूकंप के जवाब में , पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज मुशरफ ने इस्लामाबाद से अहमदाबाद के लिए राहत सामग्री का एक विमान भेजा । वे 200 तंबू और 2,000 से अधिक कंबल ले गए। इसके अलावा, राष्ट्रपति ने भूकंप से हुए नुकसान पर अपनी 'सहानुभूति' व्यक्त करने के लिए भारतीय प्रधान मंत्री को बुलाया। भारत और पाकिस्तान के बीच, राज्यों के बीच और लोगों के बीच ऐसा संबंध है - संघर्ष और सहयोग का एक द्विभाजित संबंध, घृणा और जिज्ञासा का, संदेह और विश्वास का।[17]

### संदर्भ

1. "BBC on the 1947–48 war". मूल से 6 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 दिसंबर 2017.
2. ↑ Jamal, Shadow War 2009, पृ° 49.
3. ↑ Robert Blackwill, James Dobbins, Michael O'Hanlon, Clare Lockhart, Nathaniel Fick, Molly Kinder, Andrew Erdmann, John Dowdy, Samina Ahmed, Anja Manuel, Meghan O'Sullivan, Nancy Birdsall, Wren Elhai, Nicholas Burns (Editor), Jonathon Price (Editor). American Interests in South Asia: Building a Grand Strategy in Afghanistan, Pakistan, and India. Aspen Institute. पृ° 155–. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-61792-400-2. मूल से 24 जून 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 November 2011.
4. ↑ Jamal, Shadow War 2009, पृ° 57.
5. ↑ Simon Ross Valentine (27 October 2008). Islam and the Ahmadiyya Jama'at: History, Belief, Practice. Hurst Publishers. पृ° 204. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1850659167.
6. "Indo-Pakistani War of 1965". मूल से 9 मई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 नवंबर 2010.
7. ↑ Thomas M. Leonard, "Encyclopedia of the developing world, Volume 2", page 806, Google Books 2001
8. ↑ "Indo-Pakistan Wars". मूल से 1 नवंबर 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 नवंबर 2010.
9. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 19 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 नवंबर 2010.
10. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 27 अगस्त 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 नवंबर 2010.
11. ल्योन, पीटर (२०००). कॉम्प्लेक्ट बिटवीन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान: एन एन्साय्क्लोपीडिया (अंग्रेज़ी में). ABC-CLIO. पृ° १६६.
12. ↑ केम्प, ज्यॉफ़र (2010). द ईस्ट मूव्स वेस्ट इण्डिय, चाइन, एण्ड एशिय 'ज' ग्राइंग प्रेसेन्स इन द मिडल ईस्ट. ब्रूकिंग्स इन्स्टीट्यूशन प्रेस. पृ° 52.
13. ↑ बायमैन, डेनियल (२००५). डैडल कनेक्शन्स: स्टेड्स दैट स्पॉन्सर टेररिज़्म. कॅम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस. पृ° 159.
14. ↑ "Indian Air Force. Squadron 5, Tuskers". Global Security. मूल स 17 जुलाई 2017 क पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 October 2009.
15. ↑ नवाज़, शूजा (२००८). क्रॉसड सोर्ड्स: पाकिस्तान, इट्स आर्मी, एण्ड द वार्स विदिन. ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस. पृ° 329. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-19-547697-2.
16. R. Dettman, Paul. "Kargil"war"repercussions". India Changes Course: Golden Jubilee to Millennium (अंग्रेज़ी में) (first संस्करण). United states of America: Praeger Publishers. पृ° 130,131,133,153. मूल से 17 मार्च 2016 को पुरालेखित.
17. ↑ "Pakistani opposition presses for Sharif's resignation". Wsws.org. 1999-08-07. मूल से 27 अक्टूबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2012-06-15.



**Impact Factor:  
7.569**



# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  [ijirset@gmail.com](mailto:ijirset@gmail.com)



[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Scan to save the contact details